International Journal of History 2024; 6(1): 125-128

E-ISSN: 2706-9117
P-ISSN: 2706-9109
www.historyjournal.net
IJH 2024; 6(1): 125-128
Received: 19-01-2024
Accepted: 22-02-2024

डॉ. श्याम मूर्ति भारती
अतिथि शिक्षक (इतिहास) रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल, मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. श्याम मूर्ति भारती
अतिथि शिक्षक (इतिहास) रास नारायण महाविद्यालय, पण्डौल, मधुबनी, बिहार, भारत

मुगल काल में राजनीतिक सत्ता का विकास

डॉ. श्याम मूर्ति भारती

सारांश
16वीं शताब्दी की आरंभिक अवस्था में भारत आए मुगलों को मुगल अथवा फारसी मुगल (मंगोल) के नाम से संबोधित किया जाता है। भारत में मुगल वंश का संस्थापक बाबर को माना जाता है। मुगल वंश ने भारत में लगभग 200–250 वर्षों तक शासन किया। मुगल काल का भारतीय इतिहास में कई कारणों से महत्व है जिनमें से एक है– काल की दृष्टि से। मुगल शासकों ने जितने भी समय तक भारतवर्ष में शासन किया, किसी भी अन्य मुस्लिम राजवंश ने इतने समय तक शासन नहीं किया। इसके साथ ही मुगल वंश के शासको ने उत्तर भारत के साथ–साथ दक्षिण भारत के भी कुछ क्षेत्रों पर अपनी सत्ता का परचम बुलंद किया। मुगलों द्वारा सत्ता संचालन हेतु कुशल प्रशासनिक ढांचे का भी विकास किया गया था जिसके आधार पर उन्होंने साम्राज्य विस्तार के साथ–साथ साम्राज्य को स्थायित्व भी प्रदान किया। मुगलों के आगमन के पश्चात भारत में एक समन्वित संस्कृति की विचारधारा का भी विकास हुआ। मुगल वंश के शासको द्वारा कला, संस्कृति और वास्तुकला के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। मुगलकालीन स्थापत्य में भारतीय, फारसी तथा इस्लामी परंपराओं का मिश्रण दृष्टिगोचर होता है। मुगल शासक साहित्य तथा कविता के भी महान संरक्षक थे।

कूटशब्दः परचम, रचनात्मक, दृष्टिगोचर, संरक्षक, सर्वोपरि, विलक्षण, वास्तुकार, निरंकुश, वंशानुगत, पुनस्संगठन

प्रस्तावना
मुगल तुर्कों की चगताई नामक शाखा के थे। इस शाखा का नाम प्रसिद्ध मंगोल नेता चंगेज खाँ के द्वितीय पुत्र के नाम पर पड़ा था जिसके अधिकार में तत्कालीन समय में मध्य एशिया एवं तुर्कों का देश तुर्किस्तान थे। मुगलों ने लोदी वंश के पतन के पश्चात 1526 में भारत में एक नवीन वंश की स्थापना की। नवीन वंश के रूप में स्थापित मुगल वंश का संस्थापक बाबर था।
बाबर एक चगताई तुर्क था। पिता की ओर से वह तैमूर वंश का वंशज था तथा मां की ओर से चंगेज खाँ से संबंधित था। इस प्रकार बाबर की धमनियों में तुर्क तथा मंगल दोनों ही रक्त प्रवाहित हो रहे थे। बाबर की उम्र जब मात्र 11 वर्ष थी तब उसे पैतृक संपत्ति के रूप में फरगना नामक एक रियासत प्राप्त हुई। बाबर के जीवन की प्रारंभिक अवस्था चुनौतियों से भरी हुई थी किंतु यह चुनौतियां उसके लिए प्रशिक्षण के समान सिद्ध हुई। बाबर ने जब अपने पूर्वज तैमूर द्वारा भारत की धरती पर किए गए वीरतापूर्ण कार्यों को सुना तो बाबर ने इससे प्रेरणा लेते हुए हिंदुस्तान को जीतने का संकल्प लिया।
बाबर को हिंदुस्तान के मध्य भाग में तब घुसने का अवसर मिला जब यहां के कुछ असंतुष्ट एवं महत्वाकांक्षी सरदारों द्वारा उसे भारत आने का निमंत्रण मिला। जिनमें से एक था पंजाब का सरदार दौलत खाँ तथा दूसरा था इब्राहिम लोदी का चाचा आलम खाँ। यह दोनों सरदार इब्राहिम लोदी से असंतुष्ट थे तथा इब्राहिम लोदी से प्रतिशोध लेना चाहते थे। बाबर ने इसे अवसर समझते हुए पंजाब में घुसकर 1524 में लाहौर पर अधिकार कर लिया। इब्राहिम लोदी तथा बाबर के बीच हुए पानीपत के प्रथम युद्ध (20 अप्रैल 1526) में इब्राहिम लोदी की पराजय हो गई। 1526 में पानीपत के युद्ध में बाबर की जीत से न केवल भारत में उसकी मर्यादा बढ़ी बल्कि उत्तर भारत में उसका राज्य स्थापित होना संभव हो गया।
जब बाबर की पानीपत के युद्ध में विजय हो गई तो उसके समक्ष कुछ चुनौतियां भी उठ खड़ी हुई। उन चुनौतियों में से एक चुनौती थी– लोदियों द्वारा दिल्ली और आगरा में सुरक्षित विशाल निधियों पर अधिकार करना तथा दूसरी चुनौती थी– आगरा में मनुष्य के लिए अनाज तथा घोड़ों के लिए दानों की अनुपलब्धता। क्योंकि वहां के निवासी भाग गए थे। अन्य चुनौतियों में बाबर के सैनिकों तथा बैगों का एक ऐसे मौसम का अभ्यस्थ नहीं होना था। साथ ही बैगों का भाव भारत के प्रति पराएपन सा था। बाबर ने इन चुनौतियों को तो आसानी से पार कर लिया किंतु मुगलों की सत्ता स्थापना की राह में दो खतरे सबसे बड़े थे। एक था– राणा सांगा और दूसरा था– अफगान शक्ति।

बाबर ने अपने दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय देते हुए इन खतरों का सामना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ा।

पानीपत के युद्ध के पश्चात भी बाबर के युद्धों का सिलसिला नहीं रुका तथा बाबर का अगला संघर्ष 1527 में राजपूतों के साथ हुआ जिसे खानवा की लड़ाई के नाम से इतिहास में जाना जाता है। इस समय राजपूतों का नेतृत्व राणा सांगा कर रहे थे। राणा सांगा राजपूतों के प्रभाव की स्थापना हेतु प्रयासरत थे किंतु खानवा के लड़ाई में बाबर को विजय मिली। इस विजय के पश्चात उत्तरी भारत में मुगल सत्ता को चुनौती देने वाली कोई बड़ी शक्ति नहीं बची थी। 1528 में बाबर ने सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण चंदेरी के दुर्ग पर अधिकार कर लिया, जहां का शासक मेदिनी राय था। इसके पश्चात बाबर ने अपना ध्यान अफगानों की ओर केंद्रित किया। 1529 में बिहार तथा बंगाल के अफगानों से पटना के ऊपर घाघरा तथा गंगा के संगम के निकट घाघरा के किनारे उसका संघर्ष हुआ, जिसमें उसने नूहानी अफगान शासको को पराजित किया। यह बाबर के जीवन की अंतिम विजय थी। इस प्रकार तीन युद्धों के परिणामस्वरूप स्वरुप बाबर ने उत्तरी भारत के विशाल भाग को अपने अधीन कर लिया किंतु लगातार लड़ाइयां लड़ते रहने और भारत की गर्म जलवायु के कारण, जिसका उसको अभ्यास नहीं था उसके स्वास्थ्य में गिरावट आने लगी और 1530 में उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु के पश्चात बाबर को पहले आगरा के आरामबाग में, परंतु बाद में उसे काबुल में उसी के द्वारा जीवन काल में चयनित स्थान पर दफना दिया गया। बाबर ने अपनी मृत्यु से पूर्व हुमायूं को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था।

बाबर यद्यपि एक महान साम्राज्य निर्माता था किंतु उसे नए कानून बनाने अथवा शासन का पुनस्संगठन करने का बिल्कुल समय नहीं मिला, न ही उसे एक सुदृढ़ वित्तीय व्यवस्था की रचना करने का समय मिला। फिर भी भारतीय इतिहास में उसकी एक विशिष्ट पहचान है। क्योंकि मुगल साम्राज्य के महल की नींव रखनेवाला वह पहला वास्तुकार था जिसके ऊपर उसके प्रख्यात पौत्र अकबर ने भवन का निर्माण किया। बाबर का काल भारत में कुछ नई परंपराओं के प्रारंभ के साथ–साथ रचनात्मक कार्यों का भी समय माना जाता है। बाबर के दरबार में फारसी संस्कृति के प्रचार के साथ ही उसके काल में अनेक राजमहलों, तलघरों, हम्मामों तथा बावलियों के निर्माण भी हुए। बाबर ने आगरे में ज्यामितीय विधि आधारित नूरे अफगान नमक बाग लगवाया, जिसे आरामबाग कहा जाता है। बाबर की आत्मकथा तुजुक–ए–बाबरी तुर्की भाषा में थी। जिसमें भारत की तत्कालीन राजनीतिक दशा, भारतीयों के जीवन स्तर, पशु–पक्षियों तथा फूलों के संबंध में विस्तृत वर्णन किया गया है।

बाबर की मृत्यु के पश्चात उसका वकील सत्ता को अपने हाथों में रखना चाहता था। इसके लिए उसने एक योजना बनाई जिसके अंतर्गत वह हुमायूं तथा उसके भाइयों को गद्दी से दूर रखकर मेहंदी ख्वाजा को गद्दी पर बैठना चाहता था, किंतु वह असफल रहा। और बाबर की मृत्यु के चार दिन पश्चात 30 दिसंबर 1530 को हुमायूं हिंदुस्तान के सिंहासन पर बैठा, किंतु बाबर के पश्चात हुमायूं ने जिस साम्राज्य को प्राप्त किया वह कमजोर और असंगठित था। हुमायूं को विरोध का भी सामना करना पड़ रहा था और मुगल शासन की वित्तीय स्थिति भी अनुकूल नहीं थी। आरंभिक इतिहासकारों ने हुमायूं को अफीमची के रूप में चित्रित किया है। इन परिस्थितियों में हुमायूं के समक्ष एक प्रमुख चुनौती थी– पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के क्षेत्र में अफगानों की। दूसरी और पश्चिम भारत में बहादुरशाह तथा पूर्वी भारत में नूहानी शासक भी हुमायूं के विरोध में खड़े थे। हुमायूं इन चुनौतियों से कुशलतापूर्वक लड़ नहीं सका और अंततः अगले 15 वर्षों के लिए भारत में अफगान शासकों की सत्ता स्थापित हो गई।

हुमायूं ने अपने जीवन काल में कई युद्ध लड़े। जिनमें पहला युद्ध 1531 में कालिंजर के शासक प्रताप रुद्रदेव के साथ हुआ। जिसमें हुमायूं असफल रहा। इसके पश्चात वह बिहार की ओर बढ़ा जहां शेरशाह से चुनार छीनने का प्रयास किया, किंतु असफल रहा। उसके पश्चात वह गुजरात के शासक बहादुरशाह की ओर बढ़ा। गुजरात के शासक को पराजित कर उसने मांडू तथा चंपानेर के दुर्ग पर विजय प्राप्त की। बहादुरशाह को पराजित करने के पश्चात वह आगरा वापस आ गया। उधर शेर खाँ अपनी शक्ति को एकत्रित करने में लगा हुआ था। 1539 में कर्मनाशा नदी के तट पर चौसा (बिहार) नामक स्थान पर हुमायूं का शेरशाह के साथ युद्ध हुआ जिसमें हुमायूं की पराजय हो गई। चौसा के युद्ध में हुमायूं को पराजित करने के पश्चात शेर खाँ ने शेरशाह की उपाधि धारण की। चौसा के युद्ध में एक भिश्ती द्वारा हुमायूं की जान बचाने का वर्णन मिलता है। अगले वर्ष कन्नौज के युद्ध में शेरशाह ने पुनः हुमायूं को पराजित किया और दिल्ली की सत्ता पर अधिकार कर स्वयं को शासक घोषित कर दिया। इस घटना के पश्चात हुमायूं भारत छोड़कर सिन्ध चला गया। हुमायूं ने 1540 से 1555 तक निष्कासित जीवन व्यतीत किया। 1555 में हुमायूं द्वारा पुनः दिल्ली का बादशाह बना, किंतु अधिक समय तक वह सत्ता का सुख नहीं भोग सका और 1556 में दीनपनाह नामक पुस्तकालय के सीढ़ियों से गिरकर उसकी मृत्यु हो गई। यद्यपि अपने जीवनकाल में ही उसने अकबर को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था।

जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर का जन्म 15 अक्टूबर 1542 को अमरकोट के राजा वीरसाल के महल में हुआ था। उसकी मां का नाम हमीदा बानो बेगम था। हुमायूं ने बैरम खान को अकबर का संरक्षक नियुक्त किया था अकबर जब कलानौर में सिकंदर सूर के साथ युद्धरत था तब उसे हुमायूं की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ। उसी स्थान पर 14 फरवरी 1556 को बैरम खान के अभिभावकतत्व में अकबर का राज्याभिषेक मिर्जा अब्दुल कासिम ने किया। 1556 से 1560 के मध्य बैरम खाँ ने अकबर के संरक्षक के रूप में कार्य किया। बैरम खाँ के प्रभाव से कई लोग ईर्ष्या करते थे अतः उन्होंने अकबर और बैरम खान के मध्य विभेद उत्पन्न करने का प्रयास किया। स्वयं अकबर भी राज्य के मामलों में ज्यादा सक्रिय भूमिका निभाने का इच्छुक था। इन परिस्थितियों में अकबर द्वारा 1560 में बैरम खान को कार्यमुक्त कर दिया गया तथा उसे मक्का चले जाने को कहा गया, किंतु मक्का जाते वक्त गुजरात के पाटन नामक स्थान एक अफगान द्वारा बैरम खाँ की हत्या कर दी गई।

1561 ई के पश्चात अकबर ने मुगल राज्य का प्रशासन स्वयं ग्रहण कर लिया, किंतु उस पर शाही हरम का प्रभाव रहा, जिसमें माहम अनगा का प्रभाव सर्वाधिक था। अकबर ने बहुत जल्द स्वयं को इस प्रभाव से मुक्त कर लिया तथा उसकी सर्वोपरि सत्ता राज्य में कायम हो गई। अकबर ने भारत में न सिर्फ एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जो मौर्य साम्राज्य के बाद भारतीय इतिहास का सबसे विस्तृत साम्राज्य था, बल्कि उसने क्षेत्र को राष्ट्रीय राज्य का रूप भी प्रदान किया। जिसके कारण अकबर को राष्ट्रीय शासक की संज्ञा दी जाती है।

मुगल साम्राज्य की स्थापना के पश्चात बाबर तथा हुमायूं को दिल्ली सल्तनत के काल से चली आ रही व्यवस्थाओं में आमूलचूल परिवर्तन करने हेतु समय नहीं मिल पाया। अकबर ने सत्ता प्राप्त करने के पश्चात इन व्यवस्थाओं की ओर ध्यान दिया। मुगल कालीन व्यवस्थाओं में एक विलक्षण व्यवस्था की शुरुआत की, जिसे मनसबदारी व्यवस्था के नाम से जाना जाता है। मनसबदारी व्यवस्था के अंतर्गत किसी व्यक्ति को दिए गए मनसब या दर्जे से सरकारी सोपान–व्यवस्था में उसका स्थान और वेतन दोनों निर्धारित होते थे। मनसबदारी व्यवस्था का उल्लेख मंगोल शासक चंगेज खान के शासन में मिलता है। अकबर ने इस व्यवस्था को अपने शासन के 11वें वर्ष में मुगल शासन में लागू किया था। मनसब का अंक दो अंकों के जोड़े के रूप में होता था। जोड़े के पहले अंक को जात मनसब तथा दूसरे अंक को

सवार मनसब कहा जाता था। इस व्यवस्था में योग्यता के आधार पर नियुक्ति होती थी। मनसबदारों के पद वंशानुगत नहीं होते थे। अकबर ने अपने शासनकाल में सद्भाव और सहयोग की भावना को ध्यान में रखकर राजपूत शासकों के साथ मित्रतापूर्ण संबंधों की शुरुआत की। जिसे अकबर की राजपूत नीति के नाम से जाना जाता है। इसके पीछे अकबर का उद्देश्य तत्कालीन राजपूत शासकों का सहयोग प्राप्त करना था, ताकि हिंदू प्रजा का साथ भी उसे मिल सके। इसके अंतर्गत अकबर ने राजपूत परिवारों के साथ वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए। उदाहरणस्वरूप उसने आमेर के राजा भारमल की पुत्री हरखाबाई से विवाह किया था। अकबर द्वारा राजपूत के संदर्भ में अपनाई गई नीतियों के पीछे कई कारण उत्तरदायी थे, जिसकी पृष्ठभूमि में अकबर द्वारा इस नीति का प्रतिपादन किया गया।

अकबर धार्मिक रूप से एक उदार शासक होने के साथ–साथ सत्य का प्रत्याशी भी था। जिसका प्रमाण उसकी धार्मिक नीतियों में दिखाई देता है। अकबर की धार्मिक नीति का उद्देश्य सार्वभौमिक सहिष्णुता थी। अकबर की धार्मिक नीति का विकास क्रमिक रूप से हुआ। अकबर ने विभिन्न धर्मों के मतावलंबियों के मध्य सार्थक वाद–विवाद के लिए इबादतखाने की स्थापना करवाई थी। किंतु उनके मध्य अहंकार एवं धर्मांधता से अप्रसन्न होकर उसने इबादतखाने को बंद करवा दिया। 1579 में अकबर द्वारा जारी मजहरनामा के अनुसार अकबर को धार्मिक मामलों का सर्वोच्च नेता घोषित कर दिया गया। धार्मिक मामलों में अकबर के इस कदम को स्मिथ ने धार्मिक क्षेत्र में भी उसकी निरंकुशता का स्थापित होना बताया है। 1582 में अकबर द्वारा सभी धर्मों में सामंजस्य स्थापित करने के लिए एक नवीन धार्मिक विचार प्रस्तुत किया। जिसे दीन–ए–इलाही के नाम से जाना जाता है। दीन–ए–इलाही की असफलता का मुख्य कारण तत्कालीन रूढ़िवादी परिस्थितियाँ थी।

1605 में अकबर की मृत्यु के पश्चात उसका बड़ा पुत्र सलीम मुगल शासक बना। जिसे अकबर प्रेम से शेखूबाबा पुकारता था। सलीम का जन्म राजा भारमल की पुत्री हरखाबाई (मरियम उज्जमानी) के गर्भ से हुआ था। जहांगीर को राजनीतिक कुशलता अपने पिता से विरासत में मिली थी। जहांगीर ने जब सत्ता का संचालन प्रारंभ किया तो उसकी नीतियों में उदारवाद का वह तत्व भी प्रभावी रहा, जो अकबर की नीतियों में था। किंतु मुगल शासन के रूढ़िवादी गुटों को यह पसंद नहीं था। जहाँगीर को सत्ता के संचालन में नूरजहां का भी सहयोग मिला। जहाँगीर ने राज्याभिषेक के बाद नुरूद्दीन मोहम्मद जहांगीर बादशाह गाजी की उपाधि धारण की थी। जहाँगीर को स्थापत्य कला, चित्रकला, वनस्पति तथा पशु–पक्षियों से अत्यधिक प्रेम था। अकबर द्वारा प्रारंभ की गई सुलह–ए–कुल नीति का जहांगीर द्वारा भी पालन किया गया। जहाँगीर ने अपने शासनकाल में दरबार में हिंदू त्योहारों को मनाने की परंपरा जारी रखी। फारसियों तथा ईसाइयों को भी अपने त्यौहार मनाने की पूरी आजादी थी। जहाँगीर के व्यक्तित्व में यद्यपि उदारता के तत्व प्रभावी थे। किंतु उसके काल में कुछ अप्रिय घटनाएं भी घटी थी। जैसे कुछ मंदिरों का ध्वंश तथा गुरु अर्जुनदेव को मृत्युदंड। अपने शासनकाल में जहांगीर न्याय व्यवस्था पर विशेष बल देता था। इस संबंध में न्याय की जंजीर विशेष उल्लेखनीय है। जहाँगीर ने अपने शासन काल में जनता की फरियाद सुनने के लिए जंजीर की व्यवस्था करवायी थी। जिसे न्याय की जंजीर कहा जाता है। कोई भी न्याय का आकांक्षी व्यक्ति अपने न्याय के संबंध में बादशाह से गुहार लगा सकता था। और जहाँगीर पूरी गंभीरता से न्याय करता था। प्रजापालक नीति के पश्चात भी जहाँगीर निरंकुश ही बना रहा। मुगल काल में पिता के खिलाफ विद्रोह करने की शुरुआत जहाँगीर के समय से ही शुरू हुई।

जहाँगीर ने साम्राज्य विस्तार के संबंध में भी कुशलता का परिचय दिया। जहाँगीर ने उत्तर भारत में मेवाड़ को पुनः प्राप्त करने के साथ दक्षिण भारत में भी व्यापक विजय अभियान चलाया। किंतु दक्षिण विजय में सबसे बड़ी बाधा बना था अहमदनगर का वजीर मलिक अंबर। खुर्रम ने अहमदनगर के अभियान को सफलतापूर्वक पूरा किया और बीजापुर शासन की मध्यस्थता के कारण मुगलों तथा अहमदनगर के मध्य संधि हो गई। इस संधि से प्रसन्न होकर जहाँगीर ने खुर्रम को शाहजहां की उपाधि दी। जहाँगीर के शासनकाल में, 1622 में एक महत्वपूर्ण घटना घटी। जिसके अंतर्गत फारस के शाह ने कंधार को मुगलों से छीन लिया।जहाँगीर के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ मुगलों के व्यापारिक संबंधों के रूप में मानी जाती है। व्यापारिक संबंधों की महत्वपूर्ण कड़ी कैप्टन हॉकिंस का जहाँगीर के दरबार में आगमन माना जाता है। किंतु कैप्टन हॉकिंस जिस उद्देश्य से जहांगीर के दरबार में आता था उस उद्देश्य में वह असफल रहा। 1627 में जहाँगीर की मृत्यु हो गई तथा उसे लाहौर में दफनाया गया।

जहाँगीर की मृत्यु के बाद मुगल शासन की गद्दी पर शाहजहां आसीन हुआ शाहजहां ने सत्ता पर अधिकार के लिए अपने भाइयों एवं सभी प्रतिद्वंदियों का अंत कर 1628 में आगरा के सिंहासन पर बैठा तथा अब्दुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद साहब किरन–ए–सानी की उपाधि धारण की। मुगल शासको में शाहजहां पहला सम्राट था जो सत्ता में आगमन से पूर्व भी दक्षिण के क्षेत्र में सैनिक अभियानों का नेतृत्व कर चुका था। शाहजहां ने दक्षिण में अहमदनगर के शत्रुतापूर्ण व्यवहार को देखकर महावत खाँ के नेतृत्व में उसे पर आक्रमण किया तथा 1632 में अहमदनगर को पूर्णतया मुगल साम्राज्य में मिला लिया। गोलकुंडा के शासक ने मुगलों से संधि कर ली। इसके पश्चात गोलकुंडा के प्रधानमंत्री अमीर जुमला के सहयोग से बीजापुर तथा मुगलों के बीच संधि हो गई और बीजापुर ने मुगलों का आधिपत्य स्वीकार कर लिया।

शाहजहां का शासन काल स्थापत्य कला की दृष्टि से स्वर्ण काल माना जाता है। शाहजहां ने आगरा एवं दिल्ली में अनेक भवनों का निर्माण कराया। इस काल को संगमरमर के भवनों का काल कहा जाता है। शाहजहां कालीन दिल्ली में निर्मित भवनों में लाल किला, जामा मस्जिद तथा आगरा में निर्मित भवनों में ताजमहल, मोती मस्जिद, दीवाने आम, दीवाने खास, रंगमहल तथा रब्बागाह का आदि प्रमुख हैं। शाहजहां के शासनकाल में स्थापत्य कला के क्षेत्र में पित्रादुरा शैली दिखाई पड़ती है। इस शैली के अंतर्गत संगमरमर में रंगीन पत्थरों को भरकर सजावट का काम किया जाता था। शाहजहां के जीवन काल में ही उसके पुत्रों के बीच सत्ता संघर्ष शुरू हो गया जिसमें औरंगजेब विजय हुआ।

औरंगजेब का जन्म 1618 में शाहजहां की पत्नी मुमताज महल के गर्भ से हुआ था 1659 में औरंगजेब का दिल्ली में औपचारिक राज्याभिषेक हुआ था तथा उसका विवाह फारस राजघराने की राजकुमारी दिलराज बानो बेगम से हुआ था। जिसे राबिया बीवी के नाम से भी संबोधित किया जाता था। अपने शासनकाल के दौरान औरंगजेब ने जनहित का ध्यान रखते हुए राहदारी (आंतरिक पारगमन शुल्क) तथा पानदारी (व्यापारिक चुंगियों) आदि करों को समाप्त कर दिया। मुगल शासको में औरंगजेब का व्यक्तित्व सबसे विवादास्पद रहा है। उसके शासनकाल में अनेक विद्रोह हुए। जैसे– जाटों, सतनामियों, राजपूतों, मराठों, बुंदेलों, सिखों तथा अफगानों का विद्रोह। औरंगजेब एक कट्टर सुन्नी मुसलमान था। उसने शरीयत को शासन का आधार बनाया, तीर्थ यात्रा कर एवं जजिया जैसे करों को पुनः लागू किया।

निष्कर्ष

मुगल साम्राज्य पूर्व आधुनिक विश्व में ज्ञात सबसे बड़े केंद्रीकृत राज्यों में से एक था। लोदी वंश के पश्चात हिंदुस्तान में मुगल वंश नामक सत्ता से न सिर्फ राजनीति बल्कि अर्थव्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था और सैन्य व्यवस्था तथा कला एवं साहित्य के

क्षेत्र में एक नया प्रतिमान स्थापित किया। मुगल शासन के नीव बाबर द्वारा रखने के पश्चात जिस प्रकार विभिन्न मुगल शासको द्वारा राजनीतिक कुशलता का परिचय दिया गया उसे न सिर्फ विरोधियों का अंत हुआ बल्कि स्थानीय राजपूत शासकों को भी सहयोगी बना लिया। मुगल काल के पूर्व के शासकों द्वारा अपनाई गई नवोन्मेषी सिद्धांतों को भी अपनाने से गुरेज नहीं किया। इससे मुगल साम्राज्य की अर्थव्यवस्था तथा प्रशासनिक व्यवस्था में भी सुदृढ़ता आयी। मुगलों द्वारा बारूद का प्रयोग तथा कुशल सैन्य संचालन के कारण ही वह लोदी को परास्त करने के पश्चात नवीन वंश की स्थापना करने में सफल हुए। मुगल शासको ने न सिर्फ साहित्यकारों को संरक्षण दिया बल्कि इस काल में ऐसे स्थापत्य स्थापत्यों का निर्माण करवाया जो वैश्विक धरोहरों में शामिल है और इस प्रकार मुगलों ने भारतीय इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान बनाया।

संदर्भ

1. मजूमदार रमेश चंद्र, राय चौधुरी हेमचंद्र, दत्त कालिकिंकर, भारत का बृहत्त इतिहास (2009) मैकमिलन पब्लिशर्स इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली। पृ०–145–146
2. तथैव पृ०–181–190
3. तथैव पृ०–208–209
4. अहमद इमत्याज, मध्यकालीन भारत (2007) नेशनल पब्लिकेशन, पटना। पृ०–178–179
5. .तथैव पृ०–206–222
6. चंद्र सतीश, मध्यकालीन भारत (2008) जवाहर पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली। पृ०–31
7. तथैव पृ०–156
8. कुमार रितेश, सामान्य ज्ञान (2021) क्राउन पब्लिकेशन्स, रांची। पृ०–72–82
9. भारतीय इतिहास (2006) किरन कम्पटीशन टाइम्स, प्रयागराज पृ०–116–117
10. यादव सत्येंद्र प्रसाद, इतिहास, स्पर्धा प्रकाशन, जमशेदपुर। पृ०–46–47
11. इंटरनेट।